राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 213
महायुद्ध
नागराज
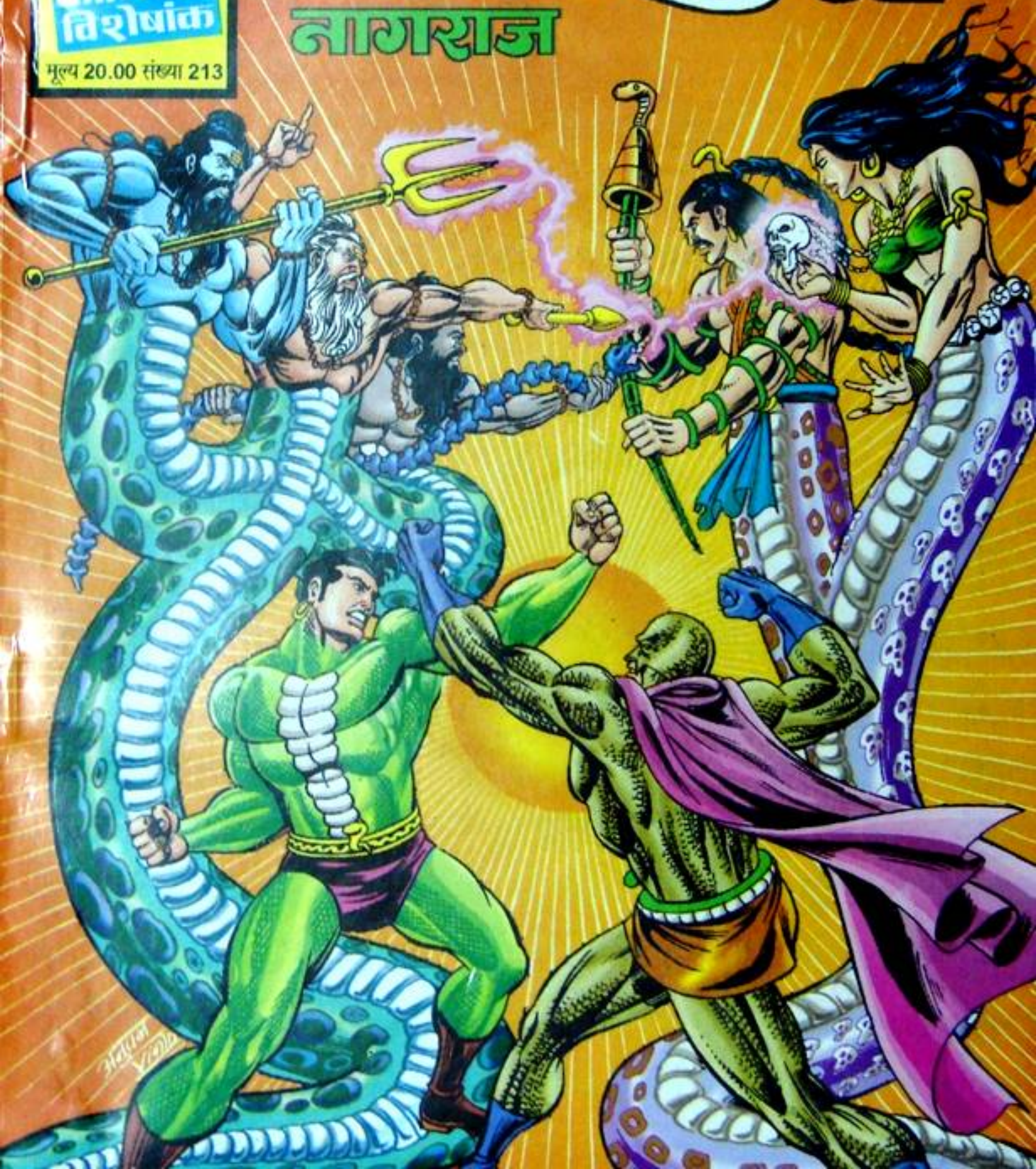
नागराज के खजाने की मणियों को हथियाने निकली नगीना भी और नागपाशा तथा गुरुदेव भी। नगीना मणियां ले उड़ी और नागद्वीप पहुंचकर तांत्रिक अंकुश की मदद से कालदूत को गुलाम बनाकर उसने कालदूत को विसर्पी को मारने के लिए भेज दिया। इधर मणियों की पूरक त्रिफना सर्प की मूर्ति की तलाश में नागपाशा तथा गुरुदेव भी आ पहुंचे नागद्वीप और राजा मणिराज की भस्म तथा नागपाशा की रक्त से एक बालक का निर्माण करने लगे! विसर्पी नागराज के पास जा पहुंची, और कालदूत तथा नागराज के युद्ध में विजय नागराज की हुई। कालदूत भी अंकुश से मुक्त हो गया। वेदाचार्य और भारती, गुरुदेव की तलाश में नागद्वीप पहुंचकर गुरुदेव की योजना को खत्म करने लगे! लेकिन असफल रहे। वेदाचार्य ने विसर्पी एवं नागराज का विवाह करवाना चाहा, ताकि बालक के पैदा होने से पहले नागराज नागद्वीप का शासक बन जाए। लेकिन बालक पहले पैदा हो गया, और नागपाशा ने शासक बनते ही, नागद्वीप के खजाने में रखी त्रिफना की मूर्ति को हासिल कर लिया! मणियां त्रिफना सर्प की मूर्ति पर स्थापित हुईं और नागपाशा तीनों समय-कालों का राजा बन गया! नागराज ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन नागपाशा ने उसे, उसी के भविष्य में भेज दिया, जहां पर नागराज बूढ़ा एवं अशक्त हो चुका है। अब एक तरफ अशक्त नागराज है, और दूसरी तरफ भविष्य के हथियारों से लैस हजारों दुश्मन!

कथा:	चित्र:	इंकिंग:	सुलेख एवं रंग संयोजन:	सम्पादक:
जॉली सिन्हा.	अनुपम सिन्हा.	विनोद कुमार	सुनील पाण्डेय.	मनीष गुप्ता.

नागपाशा ने मुझे मेरे ही भविष्य में भेज दिया है!... अब मेरे पीछे सैकड़ों दुश्मन हैं, और मुझे यह तक पता नहीं है कि इस भविष्य में मेरे पास कितनी शक्तियां हैं? कैसे जीतूंगा मैं ये...

महायुद्ध

जब तक मुझे अपनी और इनकी शक्तियों का अन्दाजा न लग जाए, तब तक मुझे इनसे बचते रहना होगा!
DEPART
नागराज वह वार तो बचा गया–
लेकिन इस मेहनत का कुछ फायदा नहीं हुआ–
आऽऽऽह!
ये किरण तो दिशा बदलकर मुझ पर वार कर रही है!
लेकिन इसका घाव तुरन्त भर भी रहा है! यानी मेरे सर्प अभी भी प्रचुर मात्रा में मेरे शरीर में हैं!
आश्चर्य! ये... ये तो 'कटिंग-बीम' का वार खाकर भी जिन्दा है! जरूर इसने कोई 'बीमप्रूफ' पोशाक पहन रखी है!
पोशाकें 'बीम-प्रूफ' तो हो सकती हैं...

...लेकिन 'ब्लास्ट-प्रूफ' नहीं हो सकती!
ये 'ब्लास्ट' हमारे दुश्मन के...
...चिथड़े उड़ा देगा!
अरे! कहां गया? अभी-अभी तो हमारी आंखों के सामने था!
अब मैं यहां हूं!
इच्छाधारी शक्ति ने मुझे बचा लिया!
ओ माई गॉड! अब ये हमारे पीछे आ गया!
ये शैतान का अवतार है!
इसको खत्म करना ही होगा!
मैं तुम लोगों को इसका मौका नहीं दूंगा!

आईईईई याऽऽऽऽ

इसके हाथों से ये कैसे कीड़े निकल रहे हैं जो हमारे हथियार छीन-कर ले जा रहे हैं!

ये कीड़े नहीं हैं! इनको सांप कहते हैं! अत्यन्त जहरीले प्राणी होते हैं ये! मैंने कल ही एक चिड़ियाघर में देखा था!

ये कैसा भविष्य का संसार है? हरियाली का नामोनिशान नहीं है! आसमान में एक भी पंछी नहीं है, और सांप सिर्फ चिड़ियाघर में मिलते हैं!

यह जरूर ऐसी दुनिया है, जो किसी भयंकर आपदा से गुजरी है! शायद ये... आणविक युद्ध के बाद की दुनिया है!

भागो!

नहीं! रुक जाओ! ये शैतान नहीं एक मामूली इन्सान है! जो मारने से मर सकता है! इसको खत्म करो!

वरना मैं तुम्हारी इस दुनिया को ही खत्म कर दूंगा!

इस बार हमलावरों को आगे बढ़ते ही विष फुंकार का सामना करना पड़ा -
ओह! ये हमसे सहेगा नहीं, और फिर आलक इसको छोड़ेगा नहीं!
शरीर से सांप छोड़ने वाले, अदृश्य होने वाले और 'कटिंग बीम' तक को झेल पाने वाले शैतान को भला कौन मार सकता है?
नफ़रेल!
नफ़रेल मार सकता है!
एक शैतान को दूसरा शैतान ही मार सकता है!
लेकिन नफ़रेल के लिए आज की बलि आ चुकी है!
कुछ ही पलों बाद - आकाश पर हवा से हमले होने लगे -
आज नफ़रेल एक नहीं दो बलियां पचाएगा!
'स्पेस पॉवर' बुलाओ! इसको नफ़रेल की ओर खदेड़ो!
ओह! इस वृद्धावस्था में मेरे शरीर में इतनी फुर्ती नहीं है कि मैं हवाई हमलों से बच सकूं! इस मुसीबत से बचकर नहीं भागा जा सकता! सामना करना पड़ेगा!
ओ! हो... ये तो छिपकली की तरह ऊपर नंदिनी टॉवर पर चढ़ता जा रहा है!

कुछ ही मिनटों में सरसराता नागराज टॉवर की आखिरी मंजिल पर था–

अब मैं इन यानों के इतनी पास पहुंच गया हूं कि इनके हमलों का जवाब दे सकूं! और विस्फोट का जवाब विस्फोट से ही दिया जाता है!

ध्वसंक सर्पों के हमले ने यान का सन्तुलन बिगाड़ दिया–

कुछ ही देर में यान, नागराज को वहां तक ले आया था, जहां पर वह उसे खदेड़कर लाना चाहता था–
महारेला के पास–
यह मैं कहां पर आ गया हूं? चारों तरफ तबाही के चिन्ह हैं! और किसी भी जीव का नामोनिशान तक नहीं...
सुबक!
ये... ये आवाज़ तो इन्सानी लगती है!
कौन हो तुम? यहां पर मरने क्यों चले आए? बलि तो आज मेरी चढ़नी है!
नागराज बलि लेने वाले की बलि चढ़ा देता है! कौन है ये महारेला, और उसको रोज बलि क्यों चढ़ती है?
क्योंकि अगर उसको बलि नहीं मिली तो वह शहर पर धावा बोल देगा! सैकड़ों जानें जाएंगी! इसीलिए हम उसकी भूख को शान्त रखते हैं! रोज एक इन्सान अपनी जान देने यहां आता है। और बाकी सबकी जान बचाता है!
तुम लोगों के पास तो अत्याधुनिक हथियार हैं! महारेला को मार क्यों नहीं डालते?
मार क्यों नहीं डालते?
लगता है तुम बाहर से आए हो।
महारेला मर नहीं सकता! हमारे हथियार उसको मार नहीं सकते!
न्यूक्लियर युद्ध के विनाश से पैदा हुआ है महारेला!
वो देखो!
?

ग्र्र्र र्र्र्र र्र्र्र्र
ये है मशरेला!
न्यूक्लियर रेडिएशन के
कारण पैदा हुआ एक अजीबो
गरीब प्राणी!
ओह! यह तो महाभयंकर जीव है!
पता नहीं मेरे वृद्ध शरीर में इतनी
ताकत बची है या नहीं कि मैं इसको
हरा सकूं या नष्ट कर सकूं!

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: फन

इस विषय में जानने के लिए पढ़ें: त्रिफना

किसी को इसी मौके का इंतजार था-
कौन?
नगीना, तू! तेरी यहां पर आने की हिम्मत कैसे...? आऽऽऽऽ
चिल्ला मत! वरना कालदूत समाधि पर से उठ आएगा!
दूसरे सैनिक का वार नगीना को छेदने के लिए आगे बढ़ चुका था-
लेकिन-
आऽऽऽह!
विषंधर! तू नगीना के साथ?
हा हा हा! देवी नगीना ने मुझे तिलिस्मी रस्सी के बंधनों से आजाद किया है! वैसे भी इनका और मेरा मकसद एक ही है!
इस बच्चे को खत्म करना! नागद्वीप के सम्राट बनेंगे तो सिर्फ... हम!
धड़ाक
आऽऽह...
महात्मा!
यह क्या? नगीना और विषंधर बच्चे को उठाकर भाग रहे हैं!

और अब महात्मा कालदूत उनके पीछे जा रहे हैं! हमको भी इनके पीछे जाकर देखना चाहिए कि ये हो क्या रहा है!

रुक जा नगीना! सम्राट को वापस मुझे सौंप दे!

नहीं कालदूत! तुझे इस बच्चे की लाश तक नहीं मिलेगी!

तू चाहती क्या है नगीना?

नागद्वीप की सम्राज्ञी बनना चाहती हूं मैं! सैकड़ों वर्षों से ये सपना मैं देख रही हूं! अब अगर नागद्वीप मेरा नहीं हुआ तो इसका भी नहीं होगा!

यानी तू सम्राट को मारकर ही दम लेगी! ठीक है! कोशिश करके देख ले!

कोशिश नहीं, मैं अपना काम करके ही रहूंगी कालदूत! ये गया तेरा सम्राट ज्वालामुखी के लावे में!
कुछ ही देर बाद ये लावे तक पहुंचकर स्वाहा हो जाएगा!
मैं उतनी देर में इनको बचा लूंगा! ये कवच कुछ देर के लिए लावे के ताप तक को सह सकता है!
और उतना समय मेरे लिए काफी है!
वह तब कालदूत...
...जब तू शिशु के पीछे ज्वालामुखी के अन्दर जा पाएगा! हम तुमको ज्वालामुखी के अंदर जाने ही नहीं देंगे!
मूर्ख नागिन! तुम दो हो तो हम तीन हैं! तू हमसे जीतने की आशा भी मत रख!

हमें तुझसे जीतना नहीं है कालदूत! सिर्फ तुझको रोके रखना है! शिशु के भस्म हो जाने तक! और यह कार्य उतना कठिन नहीं है!

आऽऽऽह! तेरी शक्तियां रत्नों के कारण चाहे बढ़ गई हो नगीना ...
खड़ाम

... लेकिन कालदूत के पास तेरी हर शक्ति की काट है!

अब तुम दोनों मरने के लिए तैयार हो जाओ!

आऽऽऽह! हम दोनों ही तंत्र शक्ति के पूर्ण ज्ञाता होने के बावजूद, कालदूत से हार रहे हैं! इसका कारण हमारी तंत्र शक्तियों का अलग-अलग होना है! हमको भी कालदूत की तरह एकाकार होना पड़ेगा! एक ही शरीर में आना होगा!
आप जैसा कहें, मैं वैसा ही करूंगा, देवी नगीना!
तो फिर सर्परूप में आकर मेरी तंत्र शक्ति के साथ अपनी शक्तियां मिलाओ!
एकाएक लड़ाई का रुख पलट गया-
हा हा हा हा! अब हमारी एकाकार तंत्र शक्ति कालदूत पर हावी हो रही है!...
एकाकार हो...
?
आऽऽऽह! ये क्या चाल चली दुष्टा!

...वैसे- वैसे इनके शरीर और भी ज्यादा जुड़ते जाएंगे! तब तक, जब तक...

...ये अर्द्ध विषंधर और अर्द्ध नगीना नहीं बन जाते!

आई ऽऽऽऽ! ये क्या हो गया? मेरा आधा शरीर कहां चला गया?

तू यही चाहती थी न नगीना?

विषंधर के साथ एकाकार होकर अपनी तंत्र शक्ति बढ़ा रही थी! अब मृत्यु भी तुम दोनों को एक साथ ही आएगी! खौलता लावा बनेगा तुम दोनों की चिता!

नगीना और विषंधर ज्वालामुखी के मुहाने में समाते चले गए—

और आग के उस दरिया में डुबकी लगा गए-

ओफ़! ये लावे की झील है। पानी की नहीं! इसलिए इसके अन्दर कुछ भी नज़र नहीं आ रहा है। टटोलना पड़ेगा! और इतनी देर में सम्राट के ऊपर चढ़ा कवच भी नष्ट हो जाएगा, और हमारे ऊपर चढ़ा कवच भी!

अपनी दुम को बढ़ाना होगा, लम्बी दुम बड़ी सुगमता से टटोलने का काम कर सकती है!

थोड़ी देर बाद- कालदूत की गुफा में-

त्रिफना से बचने का कोई तरीका नहीं है वेदाचार्य! और अगर होता भी तो वह मैं तुमको नहीं बताता!

क्योंकि नागराज को नागपाश ने दंश दिया है! और फिलहाल नागपाश यहां के कार्यकारी सम्राट हैं! मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकता!

उस शिशु की मृत्यु!

उस अप्राकृतिक शिशु को रास्ते से हटाना होगा! उसके हटते ही नागपाश का प्रभाव अपने-आप ही खत्म हो जाएगा!

लेकिन दादाजी, अभी-अभी आपने खुद देखा कि ऐसा करने की चेष्टा करने पर महात्मा ने नगीना और विषंधर को मृत्यु के हवाले कर दिया!

नागराज को मौत से बचाना है तो मौत से खेलना होगा भारती! मैं तक्षकराज के कुल का दीपक बुझने नहीं दूंगा! चाहे खुद बुझ जाऊं!

नहीं, नहीं! ऐसा मत करिएगा, वेदाचार्य! वह शिशु जैसा भी है पिताजी की निशानी है। मेरे पिता मणिराज का अंश है उसके शरीर में! वह मेरा भाई है!

भइया विषप्रिय की मृत्यु के बड़े दिनों बाद कोई ऐसा मिला है, जिसे मैं राखी बांध सकूं! उसकी मृत्यु मेरी मृत्यु होगी वेदाचार्य!

हां, फेसलेस! जाओ, भारती और फेसलेस को ढूंढकर उसे मेरे पास भेज दो!

ठीक है, दादाजी!

अब तुम मेरी योजना ध्यान से सुनो विसर्पी!

और कुछ ही देर बाद कालदूत की गुफा में-

लाओ! इसको मैं घुमाकर लाती हूं!

अगर वेदाचार्य सही हैं तो मुझ पर कोई शक नहीं करेगा!

ले जाओ! तुम्हारा ही भाई है!

इससे पहले कि महात्मा कालदूत को पता चले, मैं इसको गुफा से बाहर...

रुक जाओ विसर्पी! सम्राट हमारी नजरों से दूर नहीं जाएंगे!

विषप्रिय के विषय में जानने के लिए पढ़ें: शंकर शहंशाह

ओफ्! महात्मा को समझाने के लिए मेरे पास न तो कोई तर्क है, और न ही समय! भागना पड़ेगा!
रुक जाओ, विसर्पी! अन्यथा हमको तुम पर प्रहार करना पड़ेगा!
आऽऽऽह!
विसर्पी को रुक जाना पड़ा-
लेकिन कालदूत, शिशु को हासिल नहीं कर पाए-
यह क्या? तूने सम्राट को खाई में फेंक दिया! ताकि यह तुझसे छीन न पाए!
नहीं! तूने सम्राट को किसी अजनबी के हवाले कर दिया है! तू राजद्रोही हो गई है विसर्पी! तुझसे तो मैं बाद में निपटूंगा!
अभी मुझे सम्राट को बचाना है!

और वहां से दूर- बहुत दूर एक दूसरे समय काल में-
तुम यहां से निकलो! आज के बाद किसी को मझरेला का आहार नहीं बनना पड़ेगा!
भागने का कोई रास्ता नहीं है! यह जगह चारों तरफ से ऊंची दीवारों द्वारा बन्द है!
तुम इस सीढ़ी पर चढ़कर चली जाओ! जल्दी करो।
की... कीड़ों की सीढ़ी? ये कैसा इन्सान है?
विष फुंकार ने मझरेला का सर चकरा दिया-
और उसका गुस्सा भड़क उठा-

इसको नष्ट करना ही होगा! मेरा विषदंश इसको गला डालेगा!
खचच
विषदंश के प्रभाव से मशरैला का हाथ तुरन्त गलना शुरू हो गया! लेकिन साथ ही साथ-
ओऽऽऽह! इसको काटते ही मुझे कमज़ोरी महसूस हो रही है। यह रेडियेशन से पैदा हुआ प्राणी है। और काटने से वह रेडियेशन मेरे शरीर में भी पहुंच गया है! खैर... अब तो यह बचेगा नहीं...
ओऽऽऽह! मेरे वृद्ध शरीर की तरह मेरी विष फुंकार में भी उतनी शक्ति नहीं है, जो मशरैला को बेहोश कर सके! सर्प-बंधनों को तो ये तोड़ डालेगा!

लेकिन-
अरे! मेरा विष सिर्फ इसका एक हाथ गलाकर ही रह गया! शायद मेरा विष भी उतना तीव्र नहीं रह गया है! मुझे इस मौके का फायदा उठाकर इसको नीचे गिरा देना चाहिए!
शायद उसके बाद मैं इस पर काबू पा सकूं!
नागराज का वार वैसा ही था, जैसे किसी ट्रक पर कंकड़ का वार-
मकरैला हिला तक नहीं! और अगले ही पल नागराज उसके शिकंजे में फंस गया-
ओह! इसका हाथ तो फिर से उग आया! यानी इसकी कोशिकाओं में तीव्र गति से बढ़ने की क्षमता है!
ऐसे प्राणी को मैं भला कैसे मार सकता हूं?
इसी वक्त-
तान्या! तुम दीवारें पार करके कैसे आ गई? तुमको तो 'कलच-बीस' द्वारा वहां छोड़ा गया था!
एक अवतार ने मुझे बचाया है। मुझे बचाने के लिए वह खुद अपनी जान पर खेल रहा है!
वह अवतार नहीं, शैतान है! और उसको हमने वहां पर इसलिए भेजा है ताकि शैतान मकरैला उस दूसरे शैतान को खत्म कर दे!
वह शैतान नहीं, भगवान का दूत है! मकरैला से मुक्ति दिलाने आया है हमें!

तुम भगवान को कब से मानने लगी तान्या?
जब से मैंने दूसरों की जान पर अपनी जान को लुटाने वाले उस अवतार को देखा है!
दोनों लड़ते-लड़ते दीवारें तोड़कर खुले में आ गए हैं! चलो, हम सब चलकर उनकी लड़ाई देखते हैं!
जो तुम जैसे नास्तिक को ईश्वर की याद दिलादे, वह मामूली इन्सान नहीं हो सकता! अगर उसने सचमुच मशरेला को खत्म कर दिया, तो हम सब उसे अवतार मान लेंगे!
क्योंकि जो मशरेला हमारे हथियारों से नहीं मर सकता, उसे कोई अवतार ही मार सकता है!
चलो!
युद्ध और भयंकर हो गया था-
वो रहे दोनों!
ध्वंसक सर्प शायद कोई कमाल दिखा सके!
धमाके का जवाब-
धमाके से ही मिला-
ओह! यह तो मिनी स्टॉमिक धमाके कर रहा है! इसकी शक्ति का राज जानना होगा!
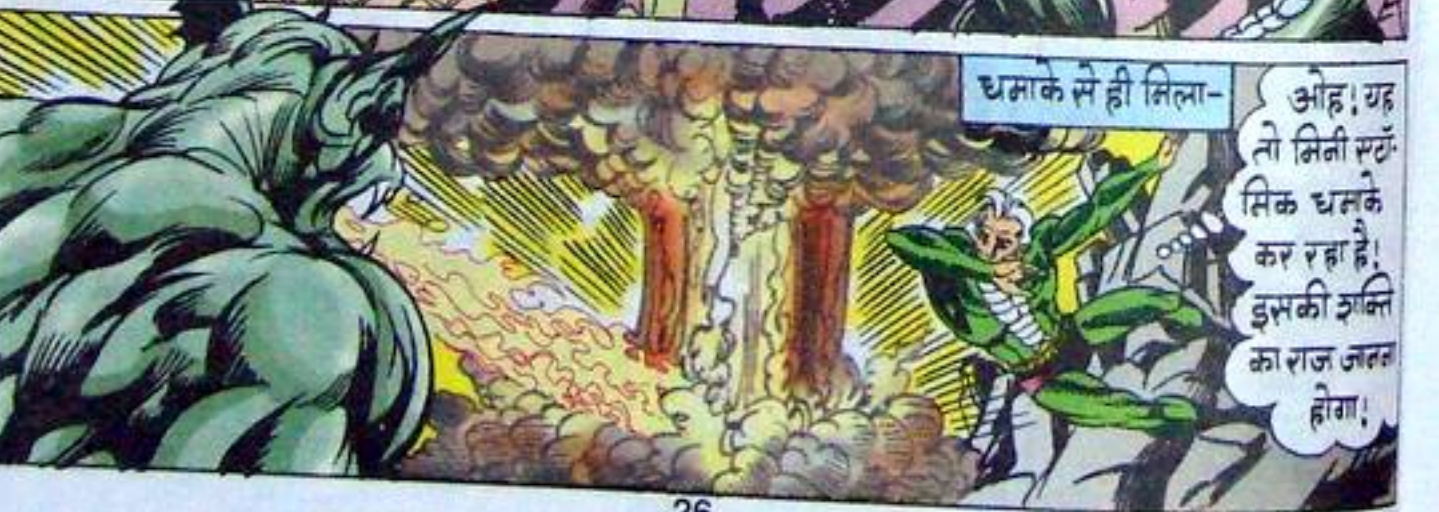
सूक्ष्म सर्पों को इसके शरीर के अन्दर छोड़ता हूं! जो मुझे मानसिक संकेतों द्वारा इसकी शक्ति का राज बताएंगे!

संकेत जल्दी ही मिलने शुरू हो गए—
नागराज! इसकी 'रक्त कोशिकाओं में नाभिकीय ऊर्जा शामिल है! जो इसके दिमाग से पैदा होकर इसके रक्त में मिल रही है, और फिर पूरे शरीर में दौड़कर इसको शक्ति दे रही है!

इसको...
ओह! संकेत मिलने बन्द हो गए! यानी इसकी एटॉमिक एनर्जी ने मेरे सर्पों को नष्ट कर दिया है!

खैर! जो जानकारी मिलनी थी, वह मुझे मिल चुकी है! लेकिन इस जानकारी का फायदा मैं कैसे उठाऊं?

मशरैला, हरी खाल वाले पर भारी पड़ रहा है!
ये बूढ़ा भला क्या खाकर मशरैला को मारेगा?
खुद मरेगा ये!

अब नागराज मरेगा, गुरुदेव!
मुझे भी इसके बचने की उम्मीद नहीं है!
मशरैला इसकी बलि लेगा ही लेगा!

नागराज को मारने के साथ-साथ उसको बचाने की कोशिशें भी जारी थीं-

हमारे हल्के तंत्र वार इस पर असर नहीं कर रहे हैं, और तीव्र तंत्र वार से सम्राट इससे छूटकर नीचे गिर सकते हैं। इसलिए निशाना बदलना पड़ेगा।

फेसलेस के चारों तरफ आग की एक दीवार खड़ी हो गई-

ये अग्नि सम्राट का बाल भी बांका नहीं करेगी, लेकिन तुझे जलाकर राख कर देगी, अजनबी! इसीलिए इसे पार करने की कोशिश न कर! और सम्राट को मेरे हवाले कर दे!

... मुझे अपनी फिक्र नहीं है! चाहे जलकर भस्म हो जाऊं, लेकिन शिशु को उसके गंतव्य तक पहुंचा कर ही रहूंगा!

जानकारी देने के लिए शुक्रिया महात्मा कालदूत! मुझे तो शिशु की चिन्ता थी!

इसीलिए मैं इस घेरे को पार नहीं कर रहा था! ...

वेदाचार्य! शिशु सम्राट को मेरे हवाले कर दे!

ये आपकी ही अमानत है महात्मा! थोड़े से उपचार के बाद आप इसे ले जा सकते हैं!

तुमने शिशु को किसी तिलिस्म में रखा है! तुम अवश्य सम्राट को नुकसान पहुंचाना चाहते हो! मैं इनको तिलिस्म में नहीं रहने दूंगा!

और मैं आपको इसे यहां से ले जाने नहीं दूंगा!

देखते हैं कि तू कब तक हमको रोक पाता है!
जिसकी सहायता के लिए ये सारे प्रयास किए जा रहे थे-
वह एक दूसरे समय काल में मौत से जूझ रहा था! मौत- जिसका नाम था, मशरेला-
हम्फ! अब तो शरीर भी थक रहा है! बार-बार इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने से मानसिक थकान भी हो रही है!
लेकिन इससे निपटने का कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है! इसकी शक्ति इसकी रक्त कोशिकाओं में नाभिकीय ऊर्जा का होना है, और उसे मैं खत्म नहीं कर सकता!
या... कर सकता हूं! एक रास्ता तो सूझ रहा है! लेकिन उसकी असफलता का मतलब होगा, मेरी निश्चित मौत!
लेकिन मौत तो इधर भी है और उधर भी! बेहतर है कि कोशिश करते हुए मरा जाए!
अरे! वह तो मशरेला से दूर भागने के बजाय उसके और पास जा रहा है! उसके मुंह की तरफ!

मक्ररेला के खुले मुंह के पास आते ही, नागराज इच्छाधारी कणों में बदल गया-
अरे! वह तो फिर से गायब हो गया!
गायब नहीं, अदृश्य बोलो! अवतार अदृश्य होते हैं!

अदृश्य नागराज, इस वक्त मक्ररेला के फेफड़ों की तरफ बढ़ रहा था-
फेफड़ों के छेदों की मदद से मैं इसकी रक्त नलिकाओं तक पहुंचूंगा! इसके रक्त में मौजूद नाभिकीय ऊर्जा, मुझे इस रूप में नुकसान नहीं पहुंचा सकती!

अब मेरे पास सिर्फ दो पल और हैं! इसके बाद मैं फिर से अपने रूप में आ जाऊंगा! और दुबारा इच्छाधारी कणों में बदलने लायक मानसिक शक्ति मुझमें नहीं है! ...
... तब इसकी नाभिकीय ऊर्जा मेरा शरीर भी गला डालेगी!

इन्हीं पलों में मुझे रक्त के साथ बहते हुए इसके हृदय तक पहुंचना है! वह रहा इसका हृदय!

ओह! यह क्या? तीन पल गुजर गए! मैं अपने असली रूप में आ रहा हूं! और रक्त में मौजूद ऊर्जा मुझे जला रही है। गला रही है!
आँ ऽऽ

... मैं इसकी नसों में फंस भी गया हूं! एक पल से भी कम का समय मेरे पास है! सारे नागफनी सर्पों! बाहर निकलो! एक साथ!
नागफनी सर्पों की फौज तेज गति से मकरैला के दिल के चिथड़े-चिथड़े करती चली गई-
मकरैला के शरीर में रक्त का प्रवाह रुक गया-
और उसको शक्ति देने वाली नाभिकीय ऊर्जा उसके दिमाग में ही इकट्ठी होने लगी-
अगले ही पल भविष्य के मानवों ने दो आश्चर्यजनक दृश्य देखे-
एक यह था-
और दूसरा यह-
फऽऽऽटाककक
वाह! मकरैला मर गया!
अवतार ने मकरैला को मार डाला!
अवतार का नाम क्या है?
चलो! अवतार नागराज का अभिनंदन करते हैं!

और कुछ ही देर बाद- नागराज की जय-जयकार हो रही थी-
अब किसी को महारैला का भोजन नहीं बनना पड़ेगा!
जय हो!
इसने हमको महारैला से मुक्ति दिलाई है तो ये हमको शासक की तानाशाही से भी मुक्ति दिलाएगा!
ये... ये नहीं हो सकता! नागराज को मरना होगा!

रुक जाओ मूर्खो! ये दुष्ट है! तुम सबको बहका रहा है! इसको खत्म कर दो!
दुष्ट तुम हो शासक, जिसने हमको इस अवतार के खिलाफ भड़काया है!

अगर तुम इसे नष्ट नहीं करोगे तो यह कार्य मुझे ही करना पड़ेगा! मैं इसके साथ-साथ तुम सबको खत्म कर दूंगा! ये तुम्हारी बगावत का दंड है!

सुरक्षा संयंत्रों से न्यूट्रॉन बम युक्त मिसाइलें छूटकर पहले अंतरिक्ष की तरफ बढ़ीं-

और फिर उनका रुख धरती की तरफ मुड़ गया! बची-खुची सभ्यता का विनाश कर देने के लिए! और नागराज न तो इस विनाश को रोक सकता था-
और न ही खुद बच सकता था-

नागद्वीप में-
तेरा हथियार रुद्राक्ष भी तेरे हाथ से छूट गया वेदाचार्य!
अब बता कि तू कैसे बचेगा?
अगर तभी वह आवाज न गूंज उठती-
यह राजकुमारी विसर्पी का आदेश है!
वेदाचार्य की अंधी आंखें बाहर की तरफ उबलती आ रही थीं-
रुक जाइए महात्मा कालदूत! वेदाचार्य को छोड़ दीजिए!
विसर्पी! तुमने... तुमने राजदंड कैसे उठा लिया? और मेरे ऊपर से नागपाश का प्रभाव भी समाप्त हो रहा है। लेकिन यह कैसे संभव हुआ है?
कुछ ही पलों में वह शिकंजा वेदाचार्य की जान ले लेता-

इस तिलिस्म के कारण महात्मा, जिसमें मैंने शिशु को रखा हुआ है। तिलिस्म ने इस बालक के शरीर में मौजूद नागपाश की कोशिकाओं को नष्ट कर दिया है। नागपाश के अंश नष्ट होने से अब यह सिर्फ मणिराज का पुत्र है। और अब विसर्पी कार्यकारी समाज्ञी है!
हम तुम्हारे ऋणी हो गए वेदाचार्य! वरना न जाने कब तक हमको नागपाश जैसे दुष्ट का आदेश मानने के लिए विवश होते रहना पड़ता! तुम्हारा यह ऋण हम कैसे उतारेंगे?
नागराज की हमको भी चिन्ता है वेदाचार्य! लेकिन त्रिफना की काट हमारे पास नहीं है! हां! एक प्रयास अवश्य किया जा सकता है!
त्रिफना की काट बता कर महात्मन्! वरना नागराज की जान नहीं बचेगी!
वह क्या महात्मन?
इसके बारे में तुमको महात्मा विष्या बताएंगे! हम तीनों में से भविष्य के प्राणी वे ही हैं!
भविष्य के प्राणी? मैं कुछ समझा नहीं!
अभी समझाने का वक्त है भी नहीं वेदाचार्य! मैं होनी सर्पिणी का आह्वान कर सकता हूं। सिर्फ वही है जो नागराज का मार्गदर्शन कर सकती है!
होनी सर्पिणी कौन है महात्मन?
वही सर्पिणी, जिसके मस्तक पर वह 'भविष्यमणि' स्थापित थी, जो अब त्रिफना में जुड़ी हुई है!
महात्मा विष्या का 'ध्यान-योग' जल्दी ही होनी सर्पिणी को खींच लाया-
आपने इतने युगों पश्चात् मुझे कैसे याद किया विष्या?
तुम्हारी मदद की जरूरत आन पड़ी है होनी! समय का सन्तुलन बिगड़ गया है। त्रिफना फिर से जाग उठा है! तुमको एक ऐसे मानव की जान बचानी है...
...जो इस संतुलन को वापस स्थापित कर सकता है!
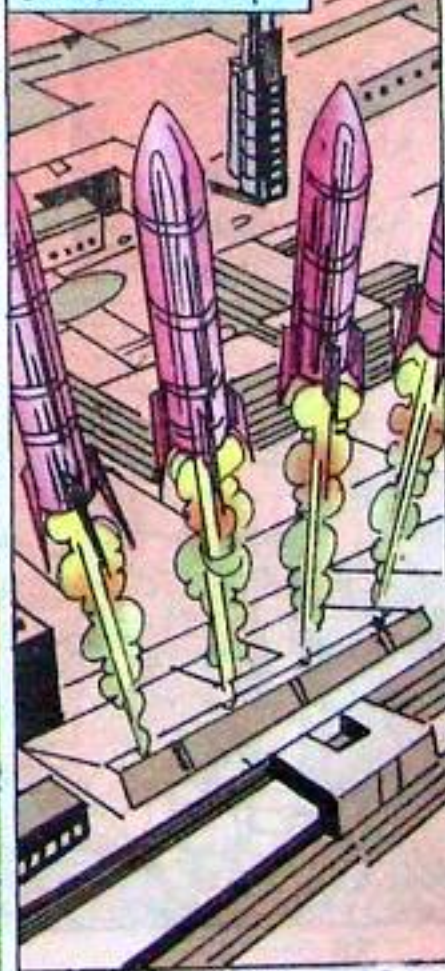
आप नागराज की बात कर रहे हैं। मैं जानती हूं कि वह भविष्य में मौत से जूझ रहा है। लेकिन मैं अपनी भविदान कर चुकी हूं! अब त्रिफना पर मेरा वश नहीं है!
मैं सिर्फ मार्गदर्शन कर सकती हूं। त्रिफना की काट नागराज को स्वयं ही ढूंढ़नी होगी!
पता नहीं, नागराज के पास जिन्दगी बची थी भी या नहीं-
भविष्य का संसार, नष्ट होने की कगार पर था-
लेकिन तभी- घातक मिसाइलों के रास्ते में कुछ आ गया-
ये... ये तो किसी किस्म के द्वार लगते हैं!
मिसाइलें इनमें घुसकर गायब हो रही हैं!
अवतार नागराज भी अदृश्य हो रहे हैं! शायद अपना काम समाप्त करके वापस जाना चाहते हैं!
यह क्या हो रहा है? मैं गायब कैसे हो रहा हूं? मैं तो इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग तक नहीं कर रहा!
यह क्या गुरुदेव? नागराज कहां लुप्त हो गया? और... और वे मिसाइलें कहां गईं?

कुछ आश्चर्यजनक हुआ है नागपाशा! नागराज और वे मिसाइलें, समय-धारा में कहीं विलीन हो गई हैं! कोई शक्ति नागराज की सहायता कर रही है! उसको ढूंढने की कोशिश करना व्यर्थ है! अभी समय धारा में ऐसे असंख्य संसार और हैं, जहां पर हमको अपनी सत्ता कायम करनी है। उसके बाद हम शक्ति पाकर देवताओं की सत्ता पर कब्जा करेंगे! चलो!
जैसा आप कहें गुरुदेव!
नागराज चकित था-
यह मैं कहां आ गया हूं! और... और मैं फिर से युवा कैसे हो गया? किसने किया है यह सब?
मैंने नागराज!
मैं समय को कुछ हद तक नियंत्रित कर सकती हूं! तुम्हारे ऊपर भविष्य के कारण आई वृद्धावस्था को मैंने ही खत्म किया है!
और उन मिसाइलों को भी मैंने ही समय द्वार के जरिए ब्रह्मांड के एक ऐसे कोने में भेज दिया है, जहां पर वे किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं!
तुम? तुम कौन हो? और मेरी सहायता क्यों कर रही हो?
घबराओ मत, नागराज! मुझे महात्मा कालदूत के एक रूप महात्मा विध्या ने भेजा है। मैं होनी सर्पिणी हूं। त्रिफना के मस्तक पर जड़ी भविष्य-मणि मेरी ही है!
लेकिन इतनी मेहनत का क्या फायदा? नागपाशा तो तीनों कालों का सम्राट बन ही गया है। देर-सवेर वह मुझे खत्म कर ही देगा!

तुम त्रिफला के जाल से निकल सकते हो, नागराज! त्रिफला का वश समय पर चलता है। तुमको समय के पार जाना होगा!

समय के पार जाना होगा? समय के पार कोई कैसे जा सकता है?

मृत्युलोक जाकर! मरने के बाद समय का भेदभाव मिट जाता है, नागराज! तुमको मृत्युलोक जाना होगा! सशरीर! यानी इस शरीर के साथ!

फिर जब तुम वापस आओगे तो समय तुम्हारा गुलाम होगा!

लेकिन यह कार्य अत्यन्त कठिन है। लगभग असंभव!

मैं असंभव को संभव बना दूंगा देवी! लेकिन मृत्युलोक तक मैं जाऊंगा कैसे?

उस रास्ते पर चलकर, जिस रास्ते से सावित्री गई थी! जिस रास्ते पर नचिकेता गया था!

तुमको उसी रास्ते पर जाना होगा नागराज! मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूंगी! मुझे सिर्फ इतना पता है कि वह रास्ता कहां से आरंभ होता है!

मैं तैयार हूं!

याद रखना नागराज! तुम्हारी असफलता का अर्थ होगा समय की मृत्यु! यानी ब्रह्मांड की मृत्यु और सृष्टि का अन्त!

मैं असफल नहीं होऊंगा देवी!

चलो!

कुछ ही पलों बाद नागराज आरंभ पर खड़ा था-

य... यह रास्ता है? इस पर तो कदम रखते ही मेरी आत्मा मृत्युलोक पहुंच जाएगी!

भूलोक से यही एकमात्र रास्ता मृत्युलोक को जाता है। इस रास्ते पर सावित्री और नचिकेता सिर्फ इसीलिए जा पाए थे, क्योंकि तब यमदेव स्वयं उनके साथ थे। अब इस पर आगे कैसे जाया जाएगा, यह तुमको स्वयं सोचना है!
शीत नागकुमार! हां... शीत नागकुमार इस आग को अपनी शीत फुहार से ढक सकता है!
शीत नाग कुमार! अपना चमत्कार दिखाओ!
लेकिन-
आऽऽह! ये अग्नि अद्भुत है! ये तो बर्फ को भी जलाती हुई मेरे अन्दर तक आ पहुंची है! आऽऽह!
नागपुल बनाने के लिए नागरस्सी अटकाने का भी कोई स्थान नहीं है। लेकिन कोई तो रास्ता होगा! अवश्य होगा!
ये गोल पत्थर! हां! यही रास्ता है! शीतो, तैयार हो जाओ!
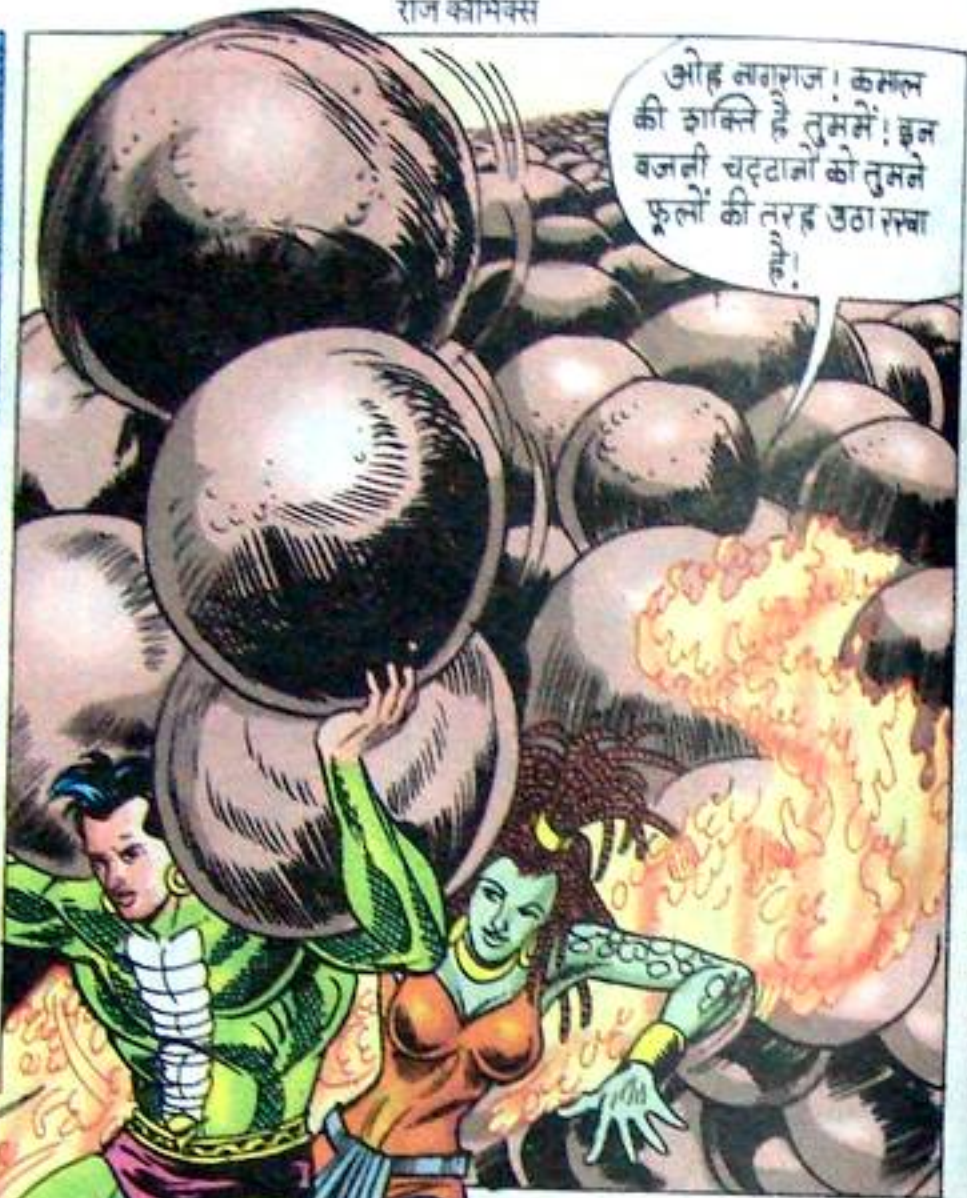
हम मृत्युलोक के रास्ते पर पहला कदम रखने जा रहे हैं!
ओह नागराज! कमाल की शक्ति है तुममें! इन वजनी चट्टानों को तुमने फूलों की तरह उठा रखा है!
ऐसा देखने में लग रहा है होगी! कितना दम लगाना पड़ रहा है, यह मुझसे पूछो!
लेकिन इतनी चट्टानें तुमने उठाई हुई क्यों हैं? ओऽऽऽ हमारे नीचे की चट्टान गर्म होकर अब पिघलने लगी है! हम आग में गिर जाएंगे!

यहां पर मेरी शक्तियां काम नहीं करेंगी! कुछ करो नागराज! कुछ करो!
ये चट्टानें मैंने कसरत करने के लिए नहीं उठा रखी हैं, होनी! अब मैं दूसरी चट्टान को रास्ते पर गिराऊंगा!
और फिर हम उछलकर इस दूसरी गोल चट्टान पर सवार हो जाएंगे।
उछलो!
थोड़ी दूर पर जब यह दूसरी चट्टान भी पिघल जाएगी, तब हम तीसरी चट्टान पर सवार हो जाएंगे! आसान है न?
तुमको चट्टानें लिए-लिए उछलना आसान लगता होगा! मेरी तो जान निकली जा रही है!
जान संभालकर रखो! 'अग्नि पथ' समाप्त हो गया है! और हमारे पास अभी भी एक चट्टान है!
सिर्फ 'अग्नि पथ' ही नहीं...

... पथ ही समाप्त हो गया है, नागराज! आगे पैर धरने तक की जगह नहीं है! ...
... आसपास कुछ भी नहीं है। सिवाय इन खोपड़ियों के जो हमारे यहां पैर धरते ही, न जाने कहां से उबकर ऊपर आ रही हैं!

सिर्फ ऊपर नहीं आ रही हैं होनी, धमाके के साथ फट भी रही हैं!

ओह! यह चट्टान भी टूट रही है! अब हम क्या करें? अब तो वापस 'अग्नि-पथ पर भी नहीं जा सकते!

चट्टानें जो खत्म हो गई हैं!

पीछे तो कदम वैसे भी नहीं रखना है होनी!

हम आगे बढ़ेंगे! हवा में तैरती इन खोपड़ियों पर झूल-झूलकर! अरे! मेरी सर्प रस्सी बाहर क्यों नहीं आ रही है?

मृत्युलोक की सीमा के अन्दर किसी की भी कोई भी शक्ति काम नहीं करती है नागराज!

फिर हम दूसरा रास्ता अपनाएंगे!

मुझे कस कर पकड़ लो होनी!

अब हम इन खोपड़ियों को रास्ता बनाएंगे!

क्या कर रहे हो नागराज! इन चिकनी खोपड़ियों पर तो खड़े रहने की जगह ही नहीं है!

और अगर ये फट पड़ीं तो...
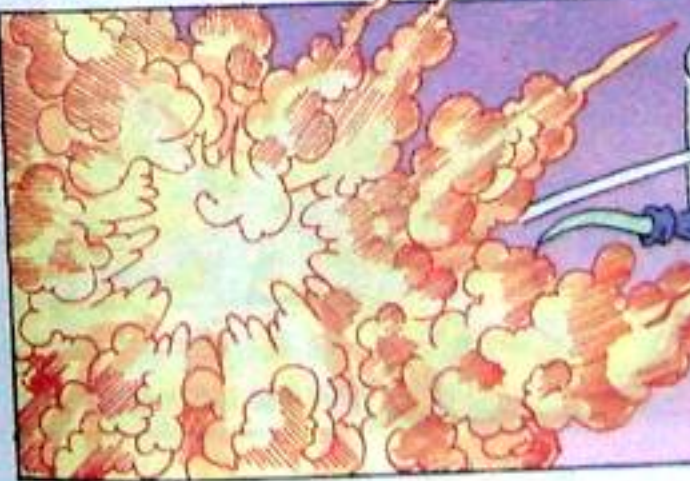
हमको यहां खड़े रहना भी नहीं है होनी! क्योंकि हमको धमाकों से मरना नहीं है!

एक खोपड़ी से पैर छूते ही हमको दूसरी खोपड़ी पर उछल जाना है!

खोपड़ियां फटती रहीं, लेकिन नागराज तथा होनी अपनी मृत्युलोक तक की यात्रा को जारी रखने में सफल होते रहे-
एक पल की चूक का अर्थ असफलता थी-
हम सही दिशा में बढ़ रहे भी हैं या नहीं होनी?
यहां पर हर दिशा एक ही मंजिल पर पहुंचाती है, भूवासी!...
...मौत की मंजिल पर! वैसे तो मृत्युलोक का रास्ता अभी भी बहुत लंबा है! लेकिन अगर तुम मुझे पार कर लो तो सीधे मृत्युलोक के द्वार तक पहुंच सकते हो!
लेकिन अब तक वह पल नागराज ने आने नहीं दिया था-
ये रास्ता तो अनन्त लगता है नागराज! ऐसे हम कब तक कूदते रहेंगे! मुझे तो इन खोपड़ियों के अलावा कुछ नजर ही नहीं आ रहा है!
इतनी भयंकर आकृति!
कौन है ये?
तुम कौन हो? और हमारा रास्ता क्यों रोकना चाहते हो?

तुम मुझे नहीं पहचानते ! कैसे पहचानोगे ? मैं तो हर प्राणी से उसके जीवन में सिर्फ एक बार मिलता हूं ! उसके जीवन के अन्त में ! मैं मृत्यु हूं, मृत्यु !
और तुम्हारा रास्ता रोकने का कारण मेरी भूख है ! मुझे आत्माओं की भूख लगती है ! त्रिफना ने समय का संतुलन नष्ट कर दिया है ! मौतें हो ही नहीं रही हैं ! इसीलिए मैं भूख से व्याकुल हो रहा हूं !
अभी मैंने सिर्फ तेरह आत्माएं खाई हैं ! शायद तुम दोनों की आत्माएं खाकर मेरी भूख शान्त हो जाए ! लाओ, अपनी आत्माएं मुझे दे दो !
हमको मृत्युलोक जाने दो ! फिर हम त्रिफना को नष्ट करके, समय का संतुलन ठीक कर देंगे ! फिर तुम पहले की तरह अपनी भूख शान्त कर पाओगे !
मुझे कोई तर्क समझ में नहीं आ रहा है ! क्योंकि मुझे भूख लग रही है !
मुझे आत्मा दो ! आत्मा !
कभी नहीं !
अगर मुझे मृत्युलोक जाने के लिए मृत्यु से भी टकराना पड़ा, तो मैं पीछे नहीं हटूंगा !
संभलकर नागराज ! तुम्हारे शरीर से स्पर्श होते ही मृत्यु तुम्हारी आत्मा खींच लेगा !
इसको अपनी त्वचा तक मत पहुंचने देना !

मुझे तेरे अन्दर लाखों आत्माओं का आभास हो रहा है, नागराज! तुझे खाकर तो मेरी कई दिनों की भूख मिट जाएगी! ला, सारी आत्माएं मुझे दे दे! वरना मैं तुझे उबलते तेल में खौलाकर मारूंगा!
इसके पाश से बचना नागराज! यह पाश तुम्हारी आत्मा खींच सकता है! पाश को इसके हाथ से छीन लो! क्योंकि यह पाश सिर्फ उसी की आज्ञा मानता है, जिसके हाथ में यह रहता है!
बहुत बोल रही है तू! तेरी जुबान बन्द करानी होगी! हमेशा के लिए!
पाश होनी के शरीर पर आ लिपटा-
और जब पाश खिंचा तो होनी की आत्मा उसके शिकंजे में थी-
आऽऽऽह! हल्की सी भूख शांत हुई! अब यह मेरे पेट में बाकी आत्माओं के साथ तब तक रहेगी जब तक मैं इनको यमदेव के हाथों नहीं सौंप देता।

अब मैं तेरी आत्माओं को खाऊंगा!
ओफ! मैं इसे छू नहीं सकता! और यह पाश कभी न कभी तो मुझे जकड़ ही लेगा! कोई हथियार ढूंढ़ना होगा! हां, यह ठीक रहेगा!
लेकिन फायदा क्या है? मैं न तो मृत्यु को हरा सकता हूं, और न ही मार सकता हूं। फिर इसको परास्त कैसे करूं?
पाश! मुझे इसका पाश छीनना होगा!...
... ताकि यह मेरी आत्मा को न खींच सके! फिर आगे की योजना बनाऊंगा!
नागराज के हाथ अपनी तरफ बढ़ते मृत्युपाश पर कस गए-
और मृत्यु तथा नागराज के बीच में रस्साकशी होने लगी-
जिसमें हार, भूख से बेहाल मृत्यु की ही हुई-
ले जा! ले जा मृत्यु पाश! मैं तुझे वैसे ही मारकर तेरी आत्माओं को खा जाऊंगा!
मेरे अन्दर तो आत्मा है ही नहीं, जिसे तू पाश में जकड़ सके!
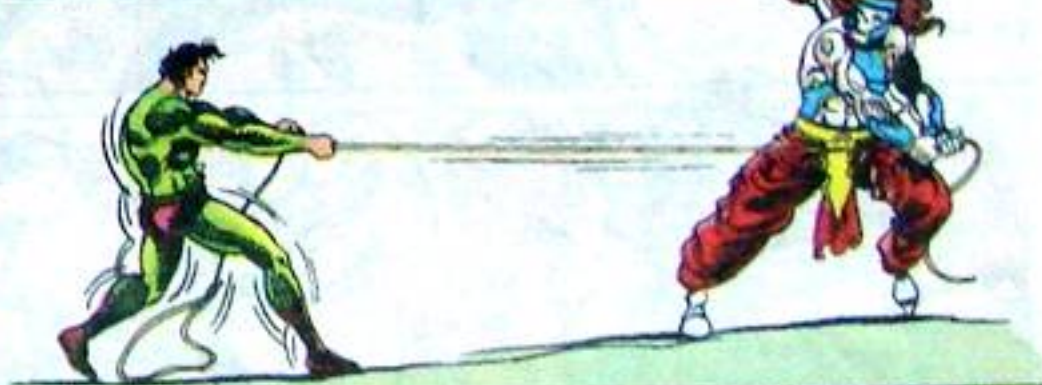
तू मृत्यु के सामने जितनी देर खड़ा रह गया है, उतनी देर आज तक कोई भूवासी खड़ा नहीं रह पाया! अब मैं तुझे और समय नहीं दूंगा! तुझे एक दर्दनाक मौत दूंगा! एक भयानक मौत!
अब तू मृत्यु के अट्टहास से मरेगा! मृत्यु नाद से! जो तेरे शरीर के हर अंग को पीस डालेगा! मसल डालेगा! तोड़ डालेगा!
आऽऽऽह! सारा शरीर कांप रहा है। कैसा भयंकर अट्टहास है ये? पूरा शरीर जैसे चक्की में पिस रहा है। काश, मृत्यु के अंदर आत्मा होती तो कम से कम मृत्युपाश तो काम आ जाता!
अरे हां! मृत्युपाश का आ सकता है! अभी ये पा मेरी बात मानेगा! क्यों कि ये मेरे हाथ में है!
मृत्युपाश, मृत्यु के अट्टहास करते खुले मुंह में घुसकर पेट तक पहुंच गया-
और जब नागराज ने उसको झटके से बाहर खींचा तो उसमें होनी के साथ-साथ अन्य कई आत्माएं भी बंधी हुई थी-

पेट खाली होते ही, मृत्यु की भूख एकाएक भड़क उठी-
आऽऽऽह! ये क्या किया नागराज! मुझे आत्माएं वापस दे दे! वरना ये भूख मुझे बेहाल कर देगी! मेरी शक्ति चली जाएगी नागराज! आत्माएं वापस दे दे नागराज!
ये आत्माएं तुझे तभी मिलेंगी, जब तू मेरे सामने घुटने टेक देगा! हार मानकर रास्ता छोड़ देगा!
घुटने तो तुमने इसके टिकवा ही दिए हैं नागराज!
?
आश्चर्यचकित हैं हम! जो आज तक सृष्टि में कोई नहीं कर सका, वह तुमने कर दिखाया! मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली!
यमदेव!
हां, नागराज! तुम्हारी परीक्षा थी ये! हम देखना चाहते थे कि तुम इस योग्य हो भी या नहीं कि तुमको समय के पार जाने की शक्ति दी जाए! तुम सर्वथा योग्य हो!
जाओ! जब तक त्रिफना जाग्रत रहेगा, तब तक तुम समय से परे रहोगे! होनी की चाल भी हम बख्शते हैं!
जाओ! जाकर त्रिफना के आतंक का नाश करो!

ऐसा ही होगा यमदेव! समय का सन्तुलन फिर से स्थापित होगा! यह नागराज का वादा है!
आओ होली!
इस दौरान, गुरुदेव तथा नागपाशा, अपना मकसद काफी हद तक पूरा कर चुके थे-
भूतकाल से भविष्यकाल तक फैली समयधारा के हर संसार पर हमारा राज कायम हो चुका है नागपाशा! अब हमारे इतने अनुयायी हैं कि हम देवताओं की बराबरी कर सकते हैं!
अब देवताओं को भी हमसे सौदा करना पड़ेगा! और इस सौदे के बदले में हम मांगेंगे इन्द्र का सिंहासन! यानी स्वर्ग पर राज!
स्वर्ग पर राज तो दूर की बात है गुरुदेव...
...तुमको अगर नर्क में मजदूरी करनी हो तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं!
नागराज! तू...तू समय धारा में कैसे आ गया? ये जरूर इस चमत्कारी नागिन के कारण संभव हुआ है!
नागपाशा, इनको उस समय काल में भेज दो, जब पृथ्वी लावे का एक गोला थी! वहां जाते ही ये दोनों अपने-आप खाक हो जाएंगे!

गुरुदेव बहुत चालाक हैं। इसके रहते नागपाशा को हरा पाना असंभव है! दोनों को अलग-अलग करना होगा!

हां, नागपाशा! सुनो अपने गुरु का आदेश और उस पर चुपचाप अमल करो! क्योंकि तीनों कालों का स्वामी होने के बावजूद तुम एक बालक से ज्यादा कुछ नहीं हो! गुरुदेव की उंगली पकड़कर चलने वाला बालक!

नहीं! ऐसा नहीं है! मैं खुद भी तुमको मार सकता हूं!

खुद तो तुम चींटी भी नहीं मार सकते, चाचा! गुरुदेव को यहां से भेज दो! फिर मुझे हराओ तो जानूं तुम्हारी शक्ति!

गुरुदेव! आप वापस अपने समय काल के संसार में लौट जाइए! मैं नागराज की लाश लेकर पीछे-पीछे आ रहा हूं!

नहीं नागपाशा! यह नागराज की चाल है! वह हमको अलग करना चाहता है! ऐसा मत करो नागपाशा, मत करो ऽऽऽ

शोनी, तुम त्रिफना के मस्तक से 'भविष्य-मणि' निकाल लो!

यह ऐसा कर ही नहीं सकती! मणि को मेरे सिवाय कोई हाथ तक नहीं लगा सकता!

यह लगा सकती है नागपाशा! क्योंकि यह इसी के मस्तक की मणि है!

अच्छा किया कि तूने मुझे यह बात बता दी! वरना मैं अति-आत्मविश्वास में मारा जाता! अब न ये मेरे पास पहुंच पाएगी, और न ही तू नागराज!
देख, नागपाश की नई शक्तियों में से एक शक्ति! कड़-कड़ी शक्ति!
नुकीली जंजीरें नागराज एवं द्रोनी के शरीरों में आ धंसी! और उनके जरिए बिजली के तेज झटके दोनों के शरीरों को कंपकंपाने लगे–

आऽऽऽह! यह कैसा अद्भुत हथियार है! इसके झटके मुझे अपना ध्यान केन्द्रित करने ही नहीं दे रहे हैं! वरना मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर बच सकता था!
अब तुम दोनों मरोगे नागराज! कड़ी-कड़ी से बचने का कोई तरीका नहीं है!
मेरी शक्तियों को भी त्रिफना नष्ट कर रहा है!
हम बचेंगे नागपाशा, जरूर बचेंगे!
नागफनी सर्प हमें बचाएंगे!
नागफनी सर्प, अमर नागपाशा का क्या बिगाड़ लेंगे! मैंने तो अमृत पिया हुआ है! अमृत! हाहा!
अमृत रावण ने भी पिया था! लेकिन वह उसके शरीर में घुल नहीं गया था, बल्कि उसकी नाभि में केन्द्रित हो गया था! तेरे शरीर में भी अमृत कहीं न कहीं पर जरूर केन्द्रित होगा! और मेरे नागफनी सर्प उस स्थान को जल्दी ही ढूंढकर अमृत चाट जाएंगे!

? ऐसा तो नगीना भी कह रही थी।
गुरुदेव ऽऽऽऽ
मैं अभी वापस आकर तुझे खत्म करता हूं नागराज!
ओह! गुरुदेव को तो मैंने खुद ही भेज दिया है! वैसे भी मुझे गुरुदेव की मदद लेकर अपनी नाक नहीं कटानी चाहिए! कुछ उपाय सोचना होगा!
लेकिन उपाय क्या हो सकता है? भागूं! हां, भागना सबसे अच्छा उपाय है! नागराज समय धारा में मेरे पीछे नहीं आ पाएगा!
नागपाशा तो डरकर भाग रहा है! क्या तुम सच-मुच इसका अमृत नष्ट कर सकते हो नागराज?
मुझे पता नहीं होगी! लेकिन यह मेरे बहकावे में आ गया है। और इसको सलाह देने वाले गुरुदेव को मैंने पहले ही इससे अलग कर दिया है!
अब इसको संभलने का मौका नहीं मिलना चाहिए! हम समय-धारा में इसका पीछा करेंगे!
अरे! तू तो समय धारा में भी चल सकता है, भतीजे! यानी.. तू मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा?
नहीं चाचा!
हां, त्रिफना दे दो तो पीछा छोड़ दूंगा!

भतीजे नागराज, तू त्रिफना लेकर क्या करेगा? त्रिफना तेरे किस काम का? उस पर तो मणियां मैंने स्थापित की हैं! त्रिफना तो मेरे वश में है! ...
...त्रिफना मेरे वश में है!

अरे हां! त्रिफना तो मेरे वश में है! ले, नागराज! ले ले त्रिफना!

ले!
यह क्या चक्कर है? नागपाशा इतनी आसानी से कैसे मान गया? क्या योजना है इसके दिमाग में?

खैर, जो भी हो? फिलहाल तो त्रिफना मेरे हाथ में है! और मुझे यह मौका नहीं गंवाना है!
होली, जल्दी करो! 'भविष्य मणि' त्रिफना के मस्तक से निकाल लो!

न न न, नागराज! त्रिफना मैंने तुमको बांटते फिरने के लिए नहीं दिया है! होली का त्रिफना से क्या मतलब? इसको तो मैं त्रिफना छूने भी नहीं दूंगा!
?

त्रिफना
तेरे पास ही
रहेगा!...
...तेरे मरते
दम तक!
त्रिफना की काल-
शक्तियां तुझ पर बेअसर है
नागराज! लेकिन त्रिफना नहीं!
अब इसके
चंगुल से तुझे मौत ही
बाहर निकाल सकती है!

आऽऽऽह! त्रिफना की मूर्ति पर मेरी सर्प शक्तियां असर नहीं डाल सकतीं! सिर्फ इच्छाधारी शक्ति का सहारा है!
लेकिन-
ओह! अद्भुत है ये त्रिफना सर्प!
मेरे इच्छाधारी रूप को भी ये पीस रहा है! मेरे कण इसके पार नहीं जा पा रहे हैं!
होनी! कुछ करो!
आजाद होने की चेष्टा करो! सिर्फ तुम ही त्रिफना को बेअसर कर सकती हो!
मैं क्या करूं, नागराज! त्रिफना की 'काल शक्ति' मेरी 'समय-शक्ति' को काट रही है! मैं लाख कोशिशों के बावजूद आजाद नहीं हो पा रही हूं!
त्रिफना ने दोहरा हमला शुरू कर दिया था-
अब ये मेरे सिर पर अपने फनों से वार कर रहा है। सौ हथौड़ों के बराबर की शक्ति है इसके वारों में! हड्डियां कड़कती जा रही हैं, और सिर की चोटों से दिमाग अंधेरे में डूबता जा रहा है!
आऽऽऽऽऽह!
हा हा हा! गुरुदेव, मैं आपके सलाह के बगैर ही जीत रहा हूं! शाबाश नागपाशा!

त्रिफना मुझे तड़पा-तड़पा कर मारना चाहता है! मुझ पर अपने फनों से एक-एक करके वार कर रहा है! एक साथ वार करके मेरा सिर क्यों नहीं फाड़ देता?
ओह! कुछ समझ में आ तो रहा है! शायद मैं खुद त्रिफना को खत्म कर सकता हूं!
इसके लिए मुझे इसके दो फनों को पकड़ना पड़ेगा!
वे फन जिन पर 'भविष्य-मणि' और 'भूतकाल-मणि' स्थापित हैं...
...और अपनी सारी शक्ति का प्रयोग करके इन मणियों का...
...एक दूसरे से स्पर्श करा देना होगा!
और जैसे ही ये दो विपरीत काल आपस में मिलेंगे...
...इनमें वैसा ही 'शॉर्ट-सर्किट' होना चाहिए जैसा बिजली की दो विपरीत धाराओं के मिलने से होता है! फ्यूज उड़ जाता है। लो त्रिफना का भी फ्यूज उड़ गया!
तेज चमक में थोड़ी देर तक कुछ भी नजर नहीं आया-

और जब चमक खत्म हुई तो-
नागराज, तुम कहां से आ गए? और... तुम्हारे साथ त्रिफना की मूर्ति भी है! ... लेकिन इसकी मणियां इसके मस्तक पर नहीं हैं! ये कैसे संभव हुआ?
मैं अपने समयकाल में वापस आ गया! इसका अर्थ है कि समय का सन्तुलन फिर से स्थापित हो गया है। और त्रिफना के मस्तक की मणियां नष्ट हो गई हैं!
सब-कुछ वैसा ही हो गया है, जैसा त्रिफना के जाग्रत होने के पहले था!
लेकिन यह सब हुआ कैसे नागराज!
बताता हूं, बताता हूं! जरा दम तो लेने दो!
और एक अंजान स्थान पर-
मणियां नष्ट नहीं हुई हैं! वे मेरे पास हैं! कालदूत नागराज के कारण एक बार फिर मुझसे जीत गया है!
यानी अगर मुझे जीतना है तो पहले नागराज को मारना होगा!
ये रहस्यमय प्राणी कौन है? पता चलते ही हम आपको अपने किसी आगामी विशेषांक में बताएंगे-
फिलहाल तो हमको नागपाशा का हाल-चाल जानना है-
आ गया तू? कहां है नागराज की लाश! ला दिखा, उसने तुझे बेवकूफ बनाया, और तू बन गया! तुझे यहां भेज दिया!
और उसको त्रिफना देने की क्या जरूरत थी! उस वक्त तो तेरे पास और भी कई सारी शक्तियां थीं! सब कुछ लुटाकर भिखारी बनकर मेरे सामने आया है!
गुरुदेव! आईऽऽऽऽ पहले मेरी एक बात सुनो!
क्या सुना रहा है गधे! बक! जल्दी बता!
मुझे आत्महत्या का कोई तरीका बता दो!
देखा?
घूम-फिर कर वहीं आ गए, जहां से हम चले थे!